# नाटक

# निर्धारित नाटकों का आलोचनात्मक अध्ययन

## नाटक एवं उसके तत्त्व

भारतीय प्राचीन आचार्यों ने नाटक के तीन प्रमुख तत्त्व माने हैं—(1) वस्तु, (2) नायक, (3) रस। किन्तु यूरोपीय विद्वानों ने इसके तत्त्वों की संख्या 6 मानी है। (1) कथावस्तु, (2) पात्र और चरित्र-चित्रण, (3) कथोपकथन, (4) देश-काल, (5) उद्देश्य, (6) भाषा-शैली। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो भारतीय आचार्यों के तीन ही तत्त्वों में योरोपीय विद्वानों के उक्त 6 तत्त्व समाहित हो जाते हैं। किन्तु आधुनिक हिन्दी नाटकों में मुख्यत: योरोपीय शैली का ही अनुकरण किया जाता है जो भारतीय शैली से भी बहुत कुछ प्रभावित है, अत: योरोपीय विद्वानों द्वारा निर्धारित तत्त्वों पर ही हम यहाँ विवेचन उपयुक्त समझते हैं–

**(1) कथावस्तु**

नाटक की कहानी को 'कथावस्तु' या 'कथानक' कहा जाता है। नाटक की वर्णन शैली कहानी या उपन्यास की कथा शैली से सर्वथा भिन्न होती है। नाटककार को अपनी कथावस्तु के चयन में कहानीकार या उपन्यासकार की भाँति अधिक सामग्री प्रयोग करने का बिल्कुल ही अधिकार नहीं होता। उसे अभिनय में एक निश्चित समय की सीमा के भीतर ही कथानक का समावेश करना होता है इसलिए वह पूरी कथा की मुख्य-मुख्य घटनाओं को ही नाटक में इस ढंग से रखता है कि दर्शकों को कथा की प्रतीति हो जाती है। उसकी कथा का आकार अधिक-से-अधिक इतना ही होना चाहिए जो तीन या चार घण्टे में अभिनीत हो सके। (वैसे आधुनिक नाटक तो अधिक-से-अधिक दो या तीन घण्टे में ही समाप्त किये जाते हैं)। नाटक की कथा दो प्रकार की होती है—

**(क) आधिकारिक अथवा मुख्य कथा–**जो नायक के चरित्र से सीधा सम्बन्ध रखती है।

**(ख) प्रासंगिक अथवा गौण कथा–**जो प्रसंगवश कथा में आ जाती है। प्रासंगिक कथा भी दो प्रकार की होती है–(अ) पताका, (ब) प्रकरी।

**(अ) पताका** वह प्रासंगिक कथा है जो मुख्य कथा के साथ-साथ अन्त तक चलती है।

**(ब) प्रकरी** वह प्रासंगिक कथा है जो बीच में ही समाप्त हो जाती है। रामायण की कथा में राम की कथा के साथ-साथ अन्त तक चलने वाली भरत की कथा 'पताका' है जबकि 'शबरी' की कथा 'प्रकरी' है।

भारतीय आचार्यों के मतानुसार नाटकों की कथावस्तु पाँच प्रकार की होती है—

(i) प्रारम्भ (ii) प्रयत्न (iii) प्रत्याण (iv) नियताप्ति (v) फलागम।

**(2) पात्र और चरित्र-चित्रण**

नाटक में घटनाओं के आधार पर पात्र होते हैं। नाटक के प्रमुख पात्र को 'नायक' कहते हैं। नायक ही नाटक में फल का अधिकारी होता है। नायक की पत्नी या प्रेमिका 'नायिका' कहलाती है। भारतीय आचार्यों के मतानुसार नायक विनीत, मधुर, त्यागी,

प्रियवादी, दक्ष, लोकप्रिय, आदर्शवादी, शास्त्रज्ञ, धर्मनिष्ठ, आत्म-सम्मानी, ओजस्वी आदि सभी गुणों से सम्पन्न होना चाहिये। किन्तु आधुनिक नाटकों में उपर्युक्त गुणों से सम्पन्न होना आवश्यक नहीं माना जाता। साधारण से साधारण और बुरा-से-बुरा व्यक्ति भी नाटक में 'नायक' हो सकता है।

**(3) कथोपकथन**

कथोपकथन ही नाटक का प्राण है। इसी से पात्रों के चरित्र का विकास होता है। नाटक में निरर्थक कथोपकथन की कोई गुंजाइश नहीं है। कथोपकथन स्वाभाविक, तर्कसंगत और यथासम्भव संक्षिप्त होने चाहिये। उसमें अभिनय की उपयुक्तता होनी चाहिये। कथोपकथन को आचार्यों ने तीन श्रेणियों में बाँटा है—

**(क) नियत श्राव्य**—यह कथोपकथन कुछ निश्चित पात्रों के ही बीच होता है। रंगमंच पर उपस्थित सभी पात्रों का सम्बन्ध उससे नहीं होता।

**(ख) सर्व श्राव्य**—यह सबके सुनने के लिए होता है।

**(ग) अश्राव्य**—यह रंगमंच पर उपस्थित किसी पात्र के सुनने के लिए न होकर केवल दर्शकों के सुनने के लिए होता है। इसे स्वगत कथन या स्वगत भाषण भी कहा जाता है। यद्यपि स्वगत कथन को आजकल अनुचित माना जाता है किन्तु इसकी उपयोगिता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

**(4) देश-काल तथा वातावरण**

देश-काल और वातावरण से पात्रों के व्यक्तित्व में स्पष्टता और वास्तविकता आती है। प्रत्येक युग, देश तथा वातावरण का चित्रण, उसकी संस्कृति, सभ्यता, रीति-रिवाज, रहन-सहन, वेशभूषा के अनुकूल होनी चाहिए। किन्तु इस चित्रण में रंगमंच की सुविधाओं और सीमित स्थान का भी ध्यान रखना होता है। प्राचीन ग्रीक आचार्यों ने इसी कठिनाई को ध्यान में रखते हुए 'संकलनत्रय' का विधान किया था। इसके अनुसार स्थान, काल और कार्य (परिस्थिति) में एकता का होना आवश्यक माना गया था। उनका विचार था कि नाटक में घटित घटना किसी एक ही कृत्य से, एक ही स्थान में और एक ही समय से सम्बन्धित हो। किन्तु आधुनिक नाटकों में इसका पालन नहीं हो रहा है।

**(5) उद्देश्य**

नाटक के उद्देश्य के सम्बन्ध में भारतीय और पाश्चात्य दृष्टिकोणों में पर्याप्त अन्तर है। हमारा देश आदर्शवादी रहा है, अत: यहाँ साहित्य रचना किसी न किसी आदर्श को ध्यान में रखकर हुई है। यहाँ के नाटकों में धर्म, अर्थ और काम जीवन के तीन प्रमुख उद्देश्यों में से किसी न किसी एक की प्रधानता अवश्य रहती है। पाश्चात्य नाटकों में व्यक्त या अव्यक्त रूप से कोई न कोई उद्देश्य अवश्य रहता है किन्तु वह किसी प्रकार की जीवन मीमांसा के रूप में होता है। आन्तरिक या बाह्य संघर्ष के द्वारा दर्शक या पाठक उस उद्देश्य को समझने में सफल होते हैं। इस उद्देश्य की प्राप्ति के साथ ही साथ संघर्ष का शमन हो जाता है। पाश्चात्य नाटककार अपने इस उद्देश्य की अभिव्यक्ति स्वयं न करके कथोपकथन के माध्यम से करता है इसलिए इसमें एक प्रकार की अस्पष्टता होती है। इस उद्देश्य की जानकारी के लिए हमें पात्रों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना पड़ता है।

**(6) भाषा-शैली**

कथोपकथन की शैली ही नाटक की मुख्य शैली है। शैली नाटक की मात्राएँ हैं। ये चार प्रकार की होती हैं—कौशिकी, सात्विकी, आरभटी व भारतीय।

शैली के साथ ही साथ नाटक की भाषा पर भी ध्यान देना आवश्यक है। नाटक की भाषा अत्यन्त ही सरल, स्वाभाविक, बोधगम्य, प्रभावशाली तथा अभिनेयता के गुणों से सम्पन्न होनी चाहिये। भाषा की दुरूहता पाठकों अथवा दर्शकों के लिए आनन्द में बाधक हो जाती है।

# 1 कुहासा और किरण

(विष्णु प्रभाकर)

**मेरठ, आजमगढ़, मुरादाबाद, बलिया, रायबरेली, झाँसी, सुल्तानपुर, लखीमपुर, खीरी, बदायूँ, पीलीभीत।**

हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित नाटक 'कुहासा और किरण' में स्वतंत्र भारत के राजनीतिक, सामाजिक जीवन से जुड़ी समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। भारत की राजनीतिक शासन व्यवस्था, बुद्धिजीवी वर्ग (सम्पादक) तथा अर्थव्यवस्था के आधार व्यापारी वर्ग, तीनों एक-दूसरे से मिलकर अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए अपने पद का दुरुपयोग कर रहे हैं। इस नाटक में इसी भ्रष्टाचार रूपी कुहासे का वास्तविक चित्रण किया गया है। विष्णु प्रभाकर ने इस नाटक में समाज के नेताओं, संपादकों तथा व्यापारियों के पाखण्ड एवं छद्मवेश को स्पष्ट किया है। स्वतंत्रता के उपरान्त भारतीय समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, पाखण्ड एवं छद्मवेश में छाए हुए कुहासे को कृष्ण चैतन्य, विपिन बिहारी, उमेशचन्द्र जैसे स्वार्थी चरित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, तो इस कुहरे को दूर करने के लिए देश-प्रेम, कर्त्तव्यनिष्ठा, आस्था एवं नवचेतना की किरणों को अमूल्य, सुनन्दा, गायत्री जैसे चरित्रों के माध्यम से सामने लाया गया है, जो अन्याय के खिलाफ खड़े होकर कुहासे के प्रतिरूप भ्रष्टाचार को दूर करने का प्रयास करते हैं।

## 'कुहासा और किरण' नाटक की कथावस्तु (सारांश)

'कुहासा और किरण' नाटक की कथावस्तु कृष्ण चैतन्य नामक एक छद्म स्वतन्त्रता सेनानी एवं समाजसेवी की सामाजिक प्रतिष्ठा का चित्रण करते हुए प्रारम्भ होती है, जिसका वास्तविक नाम 'कृष्णदेव' है और जो मुलतान में हुए सन् 1942 ई. के आन्दोलन में स्वतन्त्रता सेनानियों के विरुद्ध मुखबिरी करता था। वह अपने पाखण्ड से स्वयं को 'कृष्णचैतन्य' के नाम से स्वतन्त्रता सेनानी एवं राष्ट्र प्रेमी के रूप में प्रतिष्ठित कर लेता है।

**प्रथम अंक**—प्रथम अंक की कहानी 'कृष्णचैतन्य' के निवास पर उनकी सेक्रेटरी सुनन्दा एवं अमूल्य के वार्तालाप से होती है। अमूल्य एक सच्चे स्वतन्त्रता सेनानी का पुत्र है। वह गरीबी एवं बेकारी में पड़ा है। सुनन्दा उसे सिफारिश करवाकर 'कृष्णचैतन्य' के यहाँ रखवाए देती है। दोनों कृष्णचैतन्य की 'षष्टिपूर्ति' के अवसर पर स्वागत की तैयारियों में व्यस्त हैं। इसी समय कृष्णचैतन्य आते हैं। दोनों उन्हें बधाई देते हैं।

अमूल्य को अपने अनिष्ट का कारण मानकर कृष्णचैतन्य शंकित रहते हैं। उन्होंने अमूल्य को विपिनबिहारी के यहाँ सम्पादक नियुक्त करवा दिया है। कृष्णचैतन्य को सरकार से 250 रुपये की पेंशन मिलती है और वे सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में दर्शकों के सामने आते हैं। प्रभा अपने उपन्यास की कथा सुनाने के लिए कृष्णचैतन्य के पास आयी। उसी समय देशभक्त डॉ. चन्द्रशेखर की विधवा अपने पेन्शन के कागजों पर हस्ताक्षर कराने आई और मुल्तान में सन् 1942 ई. के आन्दोलन तथा घटना का विवरण सुनाया, जिसे सुनकर कृष्णचैतन्य घबरा उठे। प्रभा और मालती में वाक्युद्ध होने लगा। इस संघर्ष में कृष्णचैतन्य सन्तुलन खो बैठे। वे प्राचीन घटनाओं को याद करके मानसिक रूप से भयभीत भी हो उठे। उन्हें भय हुआ कि उनकी कलई खुल न जाय।

कृष्णचैतन्य की पत्नी गायत्री अपने पति के व्यवहार एवं कपटी आचरण से विरक्त होकर अपने भाई के पास चली गई है। कृष्णचैतन्य अपने सभी सहयोगियों की कमी व दुर्बलताओं को जानता था।

**द्वितीय अंक**—इस अंक की घटना विपिनबिहारी के सम्पादकीय कार्यालय से सम्बन्धित है जहाँ विपिनबिहारी युवक अमूल्य को अपने काम तक सीमित रहने का निर्देश देते हैं। अमूल्य विपिनबिहारी को बतलाता है कि उसके पिता स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थे। मुलतान षड्यन्त्र केस के पाँच अभियुक्तों में उनका भी नाम था। कृष्णदेव नामक विश्वासघाती मुखबिर की काली करतूत के कारण मालती के पति तथा दल के नेता डॉ. चन्द्रशेखर तथा उसके पिता को जेल की सजा भुगतनी पड़ी थी। कृष्णचैतन्य की सेक्रेटरी सुनन्दा विपिनबिहारी के पास आकर कृष्णचैतन्य की सच्ची कहानी प्रकाशित कराना चाहती है कि वास्तव में मुखबिर कृष्णदेव ही आज छद्मवेश में 'कृष्णचैतन्य' बने हुए हैं। किन्तु विपिनबिहारी इस सत्य कहानी को प्रकाशित करने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। प्रभा भी आकर देश में फैले मुखौटाधारी भ्रष्टाचारियों को बेनकाब करने का सुझाव देती है किन्तु विपिनबिहारी कृष्णचैतन्य के

विरुद्ध कुछ भी लिखने में अपनी असमर्थता व्यक्त कर देते हैं। युवक 'अमूल्य' सभी के रहस्य को खोल देता है। विपिनबिहारी सभी को समझाने का असफल प्रयास करते हैं किन्तु कोई प्रभाव नहीं पड़ता। फिर 50 रिम कागज उमेशचन्द्र अग्रवाल के हाथ चोरी से बेचने के अपराध में पुलिस इन्सपेक्टर आकर अमूल्य को गिरफ्तार कर लेता है जिसके पीछे कृष्णचैतन्य की साजिश है। प्रभा और सुनन्दा कृष्णचैतन्य की धूर्तता से क्षुब्ध और क्रोधित होती हैं। अमूल्य को इतनी यातना दी जाती है कि वह आत्म-हत्या करने के लिए तैयार हो जाता है। सुनन्दा इसकी सूचना कृष्णचैतन्य की पत्नी 'गायत्री' को देती है जो अमूल्य को देखने के लिए अस्पताल जाती है और आते समय कार-ट्रक दुर्घटना के बहाने आत्म-हत्या कर लेती है। कृष्णचैतन्य, उमेशचन्द्र तथा विपिन में गुप्त वार्ता होती है। विपिनबिहारी अब आगे इस प्रकार से भ्रष्ट आचरण से मुक्ति चाहने का संकेत देता है किन्तु कृष्णचैतन्य ''मरेंगे हम तीनों, डूबेंगे हम तीनों'' कहकर बात को टाल देता है। इस बीच उसे पत्नी की दुर्घटना का समाचार मिलता है और तीनों देखने के लिए वहाँ से अस्पताल के लिए चल पड़ते हैं। आम आदमी के इस व्यंग्य के साथ कि ''आखिर इन्हें भी भगवान की याद आई। दर्द का पता लगा क्या होता है। काश .....'' और दूसरे अंक की समाप्ति होती है।

**तीसरा अंक**—कृष्णचैतन्य पत्नी की मृत्यु के पश्चात् अपने निवास-स्थान पर गायत्री देवी के चित्र के समीप स्तब्ध भाव से बैठे चिन्ता मग्न हैं। वे गायत्री के बलिदान की महानता और अपनी नीचता को अनुभव करते हैं। एक पत्र को जिसे उसने मृत्यु से पहले लिखा था, प्रस्तुत करते हैं। सुनन्दा इसकी सूचना पुलिस को देकर जीवित व्यक्तियों के मुखौटे उतारना चाहती है। सी0 आई. डी0 के सुपरिन्टेन्डेन्ट टमटा का अमूल्य के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु आगमन होता है। प्रभा अमूल्य को निर्दोष सिद्ध करना चाहती है। विपिनबिहारी अपने पत्रों के स्वामित्व परिवर्तन की सूचना देकर टमटा के साथ अपनी उदारता प्रदर्शित करते हैं। किन्तु अचानक कृष्णचैतन्य टमटा के समक्ष सभी रहस्यों को खोल देते हैं और स्पष्ट कर देते हैं कि मुलतान षड्यन्त्र केस का मुखबिर कृष्णदेव मैं ही हूँ। वे उमेश और विपिन को भ्रष्टाचार तथा अमूल्य को झूठे अभियोग में फँसाने के कुचक्र को भी टमटा के आगे स्पष्ट कर देते हैं। टमटा साहब सभी को अपने साथ चलने को कहते हैं। कृष्णचैतन्य अपना सर्वस्व मालती को सौंप पत्नी गायत्री देवी को प्रणाम कर टमटा के साथ चल देते हैं। आम आदमी स्टेज पर आकर 'कृष्णचैतन्य' को 'कृष्ण मन्दिर' (जेल) में भिजवाने की सूचना देता है। विपिनबिहारी और उमेशचन्द्र का सामाजिक बहिष्कार किया जाता है। अमूल्य छूट जाता है और मुखौटाधारियों को बेनकाब करने के लिए जनता को संकेत देता है। वह चोर दरवाजे तोड़ कर मगरमच्छों को देखने का निश्चय करता है तभी आम आदमी द्वारा सूचना मिलती है कि विपिन और उमेश दोनों पुलिस की गिरफ्त में आ गये हैं। अमूल्य के इस निर्णयात्मक वाक्य के साथ कि—''बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाता'' नाटक का अन्त होता है।

## अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न 1.** नाट्यकला की दृष्टि से 'कुहासा और किरण' की समीक्षा कीजिए।

**प्रश्न 2.** 'कुहासा और किरण' नाटक की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

**प्रश्न 3.** कथानक की दृष्टि से 'कुहासा और किरण' की समीक्षा कीजिए।

**प्रश्न 4.** 'कुहासा और किरण' नाटक का कथासार अपने शब्दों में लिखिए।

**प्रश्न 5.** 'कुहासा और किरण' नाटक की कथावस्तु/कथानक पर प्रकाश डालिए।

**प्रश्न 6.** इस नाटक के प्रमुख पात्र (नायक) अमूल्य का चरित्र-चित्रण कीजिए।

**प्रश्न 7.** 'कुहासा और किरण' नाटक का नायक कौन है? उसकी चारित्रिक विशेषताएँ संक्षेप में बताइए।

**प्रश्न 8.** ''कुहासा और किरण' नाटक में सामाजिक समस्याओं और ऐतिहासिक घटनाओं का सुन्दर सामंजस्य है।'' स्पष्ट कीजिए।

**प्रश्न 9.** 'कुहासा और किरण' एक समस्यामूलक नाटक है। सिद्ध कीजिए।

**प्रश्न 10.** भाषा और संवाद-योजना की दृष्टि से 'कुहासा और किरण' की समीक्षा कीजिए।

**प्रश्न 11.** विष्णु प्रभाकर की नाट्य-शैली पर प्रकाश डालिए।

**प्रश्न 12.** नाटक के सर्वाधिक मार्मिक प्रसंगों पर प्रकाश डालिए।

# 2 आन का मान

(हरिकृष्ण 'प्रेमी')

**वाराणसी, लखनऊ, इटावा, बरेली, फर्रुखाबाद, एटा, शाहजहाँपुर, उन्नाव, हमीरपुर।**

हरिकृष्ण प्रेमी द्वारा रचित नाटक 'आन का मान' की विषय-वस्तु मुगलकालीन भारत के इतिहास से अवतरित है, जिसमें राजपूत सरदार दुर्गादास की स्वाभाविक बहादुरी, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि को चित्रित कर उसके व्यक्तित्व की महानता को प्रस्तुत किया गया है। नाटककार ने इस नाटक के माध्यम से मानवीय गुणों को प्रस्तुत किया है, साथ ही समाज में साम्प्रदायिक सौहार्द्र के संदेश को प्रसारित करने का सफल प्रयास किया है। इस नाटक में वीर दुर्गादास जहाँ भारतीय हिन्दू संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं, वहीं इनके समानान्तर मुगल सत्ता को रखा गया है। 'आन का मान' नाटक का प्रमुख उद्देश्य भारतीय युवकों एवं नागरिकों में स्वदेश के प्रति प्रेम की भावना का संचार, राष्ट्रीय एकता, धार्मिक सहिष्णुता, विश्वबन्धुत्व, सत्य व नैतिकता जैसे मानवीय भावों का चित्रण कर समाज में उनकी स्थापना को प्रेरित किया गया है।

## 'आन की मान' नाटक की कथावस्तु (सारांश)

**प्रथम अंक**–नाटक का प्रारम्भ मुगल शहजादी सफीयतुन्निसा और बुलन्द अख्तर के पारस्परिक बातचीत से होता है। दोनों अपने पिता अकबर के ईरान चले जाने के बाद वीर दुर्गादास राठौर के यहाँ पल रहे हैं। दोनों की बातचीत का विषय औरंगजेब की संकीर्ण विस्तारवादी नीति की आलोचना है। फिर दुर्गादास का प्रवेश होता है। वह औरंगजेब के हिंसक कारनामों को उनके सामने खोलता है, जिससे दोनों क्षुब्ध हो जाते हैं। दुर्गादास और शहजादा अख्तर थोड़ी देर में तुरही की आवाज सुनकर शत्रु का सामना करने के लिए चले जाते हैं। अकेली शहजादी सफीयतुन्निसा चाँदनी रात के सौन्दर्य पर मुग्ध हो गीत गाने लगती है। गीत के स्वर को सुनकर अजीत सिंह पहुँच जाते हैं और दोनों में प्रेमालाप होने लगता है। इसी बीच वीरवर दुर्गादास वापस आ जाते हैं। वे दोनों के प्रेमालाप को उचित नहीं मानते और उन्हें समझाते हैं। फिर मुकुन्ददास खीची कोई गोपनीय सन्देश दुर्गादास के पास लाते हैं, जिससे अजीत सिंह को अविश्वास हो जाता है; किन्तु कासिम खाँ उसका निराकरण कर देते हैं। अन्त में औरंगजेब की ओर से शहजादी और शहजादे को वापस कराने के लिए ईश्वरदास सन्धि का प्रस्ताव लेकर आते हैं और शुजाअत खाँ को लेकर दुर्गादास से आमने-सामने बातचीत करा देते हैं। अजीत सिंह अपने उतावलेपन में आकर शुजाअत खाँ पर तलवार उठा लेते हैं, किन्तु दुर्गादास इसे अनुचित मानकर रोक देता है। नाटक के प्रथम अंक में बस इसी कथा का उल्लेख है।

**द्वितीय अंक**–औरंगजेब की भी दो पुत्रियाँ हैं—मेहरु तथा जीनत। मेहरु औरंगजेब द्वारा हिन्दुओं पर किये जा रहे अत्याचारों का विरोध करती है। जीनत पिता की समर्थक है। औरंगजेब अपनी पुत्रियों की बात सुनता है तथा मेहरु द्वारा बताये अत्याचारों के लिए पश्चात्ताप करता है। औरंगजेब अपनी पुत्रियों को जनता के साथ उदार व्यवहार करने के लिए कहता है। औरंगजेब अपने अन्तिम समय में अपनी वसीयत करता है कि उसका संस्कार सादगी से किया जाए। इस समय ईश्वरदास दुर्गादास को बन्दी बनाकर औरंगजेब के पास लाता है। औरंगजेब अपने पौत्र-पौत्री बुलन्द तथा सफीयत को पाने के लिए दुर्गादास से सौदेबाजी करता है, परन्तु दुर्गादास इसके लिए तैयार नहीं होते।

**तृतीय अंक**–तृतीय अंक सफीयतुन्निसा (शहजादी) के 'अगर पंख मैं भी पा जाती–नभ के पार त्वरित उड़ जाती।' गीत से प्रारम्भ होता है। फिर सफीयतुन्निसा और अजीत सिंह की बातचीत होती है, जिसमें एक ओर अजीत सिंह की भावुकता और दूसरी ओर सफीयतुन्निसा की सच्ची प्रेम-भावना का दिग्दर्शन कराया गया है। सफीयतुन्निसा अजीत सिंह से सच्चा प्रेम-भाव रखते हुए मारवाड़ और अजीत सिंह के हित में उससे विवाह करना नहीं चाहती। दूसरी ओर अजीत सिंह क्षणिक आवेश और भावुकता में

सफीयतुन्निसा को जबर्दस्ती अपने प्रेम-पाश में बाँधे रखना चाहते हैं। भाई शहजादा बुलन्द अख्तर भी जाता है। वह भी अजीत सिंह को समझाने का असफल प्रयास करता है। बुलन्द अख्तर के चले जाने के बाद अजीत सिंह पुन: सफीयतुन्निसा से प्रेमालाप करने लगते हैं। इसी बीच दुर्गादास दो हृदयों के मधुर मिलन को नष्ट करने लगते हैं और अजीत सिंह को कर्त्तव्य का ध्यान दिलाते हुए सफीयतुन्निसा को औरंगजेब के हाथों में सौंपने का कारण बतलाते हैं—"राजपूत, शत्रु-परिवार की नारियों की उतनी ही प्रतिष्ठा करते हैं जितनी माँ-बहनों के सम्मान की। मुझे आज मारवाड़ में शहजादी की प्रतिष्ठा सुरक्षित दिखायी नहीं पड़ती।"

अजीत सिंह दुर्गादास का विरोध करता है और अपने अधिकार से सफीयतुन्निसा को रोकने की घोषणा करता है; किन्तु दुर्गादास निर्भीकतापूर्वक इसका विरोध करता है। इस बीच मुकुन्ददास खीची मेवाड़ के राजपूत के आगमन की सूचना देते हैं, जो मेवाड़ की राजकुमारी के साथ मारवाड़ के महाराजा अजीत सिंह का विवाह सम्पन्न कराने हेतु सगाई का टीका लेकर आये हैं। अजीत सिंह इनका विरोध करते हैं, किन्तु सफीयतुन्निसा इस सम्बन्ध को मारवाड़ के हित में उचित मानकर इस सम्बन्ध को स्वीकारने हेतु अजीत सिंह को सहमति देती है।

इसी बीच बुलन्द अख्तर और कासिम खाँ एक पालकी के साथ आते हैं। शहजादी सफीयतुन्निसा सम्मान सहित पालकी पर बिठाकर औरंगजेब के पास भेज दी जाती है। दुर्गादास उसकी पालकी को अपने कन्धे का सहारा देकर शहजादी को सम्मान देते हैं। अजीत सिंह रोकना चाहते हैं, किन्तु कासिम खाँ और मुकुन्द दास उन्हें रोक देते हैं। अजीत सिंह क्रुद्ध होकर दुर्गादास को राज्य से निर्वासित कर देते हैं। पालकी बढ़ जाती है और इसी दृश्य के साथ तीसरा और अन्तिम अंक का पर्दा गिर जाता है।

## अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न 1.** 'आन का मान' नाटक के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

**प्रश्न 2.** नायक दुर्गादास का चरित्र-चित्रण कीजिए।

**प्रश्न 3.** 'आन का मान' नाटक की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

**प्रश्न 4.** 'आन का मान' नाटक के भावनात्मक स्थलों का वर्णन कीजिए।

**प्रश्न 5.** 'आन का मान' नाटक की कथावस्तु संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए।

**प्रश्न 6.** 'आन का मान' नाटक के प्रथम अंक की कथा संक्षेप में लिखिए।

**प्रश्न 7.** 'आन का मान' नाटक के द्वितीय अंक की कथा संक्षेप में लिखिए।

**प्रश्न 8.** सिद्ध कीजिए कि 'आन का मान' नाटक दुर्गादास के आदर्श चरित्र पर आधारित है।

# 3 गरुड़ध्वज

**( पं. लक्ष्मीनारायण मिश्र )**

**आगरा, गोरखपुर, जौनपुर, फैजाबाद, बिजनौर, फतेहपुर, गोण्डा, सीतापुर, प्रतापगढ़, बहराइच, ललितपुर।**

पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र द्वारा रचित ऐतिहासिक नाटक 'गरुड़ध्वज' की कथावस्तु शुंग वंश के शासक सेनापति विक्रममित्र के शासनकाल और उसके व्यक्तित्व पर आधारित है। 'गरुड़ध्वज' में प्राचीन भारत के स्वरूप का चित्रण किया गया है। इस नाटक में धार्मिक संकीर्णताओं एवं स्वार्थों के कारण विघटित होने वाले देश की एकता एवं नैतिक पतन की ओर नाटककार ने ध्यान आकृष्ट किया है। इस नाटक में आचार्य विक्रममित्र, कालिदास, कुमार विषमशील, वासन्ती, मलयवती आदि पात्रों के द्वारा धार्मिक सहिष्णुता, राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रप्रेम, नारी स्वाभिमान जैसे गुणों को प्रस्तुत कर समाज में इनके विकास का सन्देश दिया गया है। इस ऐतिहासिक नाटक में समाज में व्याप्त समस्याओं, विदेशियों द्वारा किए गए अत्याचार एवं धर्म तथा अहिंसा के नाम पर राष्ट्र की पहचान से छेड़छाड़ करने वालों के षड्यन्त्रों को रेखांकित किया गया है।

## 'गरुड़ध्वज' नाटक की कथावस्तु (सारांश)

**प्रथम अंक**—नाटक के प्रथम अंक की घटना राजधानी विदिशा में घटित होती है, जिसमें विदिशा के वैभव, वंश और राष्ट्र के लिए त्याग करने वाले आचार्य विक्रमादित्य का चरित्र उजागर हुआ है। शुंग वंश का पुष्यमित्र सम्राट के अकर्मण्य हो जाने के पश्चात् विदेशियों द्वारा कुचली जाने वाली प्रजा के आग्रह से शासन अपने हाथ में ले लेता है और 'सम्राट' अथवा 'महाराज' शब्द का सम्बोधन अपने लिए अग्राह्य और घृणित घोषित कर देता है। विक्रम मित्र भी उसी परम्परा का पालन करते आ रहे हैं। नाटक का प्रारम्भ इसी प्रसंग को लेकर होता है। राज्य-कर्मचारियों के पारस्परिक हास-परिहास के बीच 'पुष्कर' नामक कर्मचारी के मुख से 'महाराज' शब्द निकल जाता है, जिसके लिए वह प्राणदण्ड के भावी संकट की आशंका से अत्यन्त ही भयभीत हो जाता है। मलयवती तथा काशिराज की कन्या वासन्ती, जिनका उद्धार विक्रम मित्र के सैनिकों ने किया है, आती है और उसके संकट-मुक्ति का आश्वासन देती है। मलयवती पुष्कर को सहस्रदल कमल लाने के बहाने बाहर भेज देती है। वासन्ती को विश्वास नहीं है कि पुष्कर दण्ड से बच जायेगा, क्योंकि उसे विक्रम मित्र की न्यायप्रियता और दृढ़ निश्चय की भली-भाँति जानकारी है। मलयवती और वासन्ती की पारस्परिक बातचीत से पाठकों को यह जानकारी हो जाती है कि विक्रममित्र कितना त्यागी, शूर और दृढ़-निश्चयी है। इसी बीच एक दूसरी प्रासंगिक घटना भी घटित हो जाती है। शुंग वंश के कुमार सेनानी देवभूति श्रेष्ठि की कुमारी कन्या कौमुदी का विवाह-मण्डप से ही अपहरण कर लेता है। इस समाचार से विक्रम मित्र अत्यन्त क्षुब्ध हो जाते हैं। उसके शासन में उनके दो आदमियों द्वारा नीति और धर्म की हत्या की जाय, उन्हें स्वीकार नहीं है। इसे वे राज्य का अपमान मानते हैं। देवभूति शुंग साम्राज्य में काशी के शासक हैं। विक्रम मित्र, देवभूति को कौमुदी समेत पकड़ लाने के लिए मेघरुद्र (कालिदास) के नेतृत्व में सैनिकों को भेजने का आदेश देते हैं।

प्रथम अंक में ही मलयवती और वासन्ती की बातचीत से यह आभास मिल जाता है कि मलयवती का झुकाव कुमार विषमशील की ओर है और वासन्ती अपने जीवन से निराश है। वह आत्महत्या द्वारा इस जीवन को समाप्त कर देना चाहती है। उसे इस लोकापवाद की आत्म-ग्लानि है कि वह एक यवन सेनापति द्वारा भगायी गयी काशिराज की पुत्री है। यद्यपि वह निर्दोष और सर्वथा पवित्र है, किन्तु लोकोपवाद के कारण उसमें आत्महीनता की भावना आ गयी है। कालिदास की रचनाओं और उनके आकर्षक व्यक्तित्व पर वह मुग्ध है।

**द्वितीय अंक**—नाटक के द्वितीय अंक में राष्ट्रीय एकता के भाव-पक्ष पर विशेष जोर दिया गया है। द्वितीय अंक की घटना भी विदिशा प्रासाद के भीतरी कक्ष से सम्बन्धित है। शुंग साम्राज्य कुरु प्रदेश तक फैला है, उसके पश्चिम यवन शासन है, जिसकी राजधानी तक्षशिला (पेशावर) है। उसका शासक अन्तलिखित है। दोनों राज्यों के सीमा के सैनिकों में परस्पर कुछ विवाद हो जाता है, जिसमें शुंग शासक बड़ा कड़ा रुख अपनाता है। इसमें यवन शासक 'अन्तलिखित' और उसका मन्त्री हलोदर (हालिओदर) दोनों आतंकित और क्षुब्ध हो जाते हैं। हलोदर भारतीय जीवन और भारतीय संस्कृति के प्रति अत्यन्त ही आस्था रखता है। वह श्रीकृष्ण का भक्त है। वह दोनों राज्यों की मैत्री को दोनों देशों की प्रजा के लिए कल्याणकारी मानता है और शासक से अनुमति लेकर सन्धि

का प्रस्ताव लेकर विदिशा पहुँच जाता है। हलोदर विदिशा में उस समय पहुँचता है, जबकि कालिदास (मेघरुद्र) सेना सहित विक्रम मित्र के आदेश से यवन श्रेष्ठि पुत्री कौमुदी के उद्धार के लिए देवभूति को पकड़ने के लिए जा चुके हैं। कालिदास भी मलयवती और वासन्ती की भाँति ही राजाश्रय में पालित वह व्यक्ति है, जिसका उद्धार विक्रम मित्र ने बौद्धों के विहार से किया है।

विदिशा में विक्रम मित्र से हलोदर की मैत्री वार्ता होती है और भारतीय संस्कृति के नये अध्याय का प्रारम्भ होता है। हलोदर प्रजा के हित की सारी शर्तों को मानते हुए विदिशा में शान्ति का स्तम्भ स्थापित करने का प्रस्ताव रखता है, जिसे विक्रम मित्र मान लेता है। हलोदर अपने कुशल शिल्पियों को शीलभद्र नामक कलाकार के नेतृत्व में इस शुभ कार्य के लिए समर्पित करता है। उसके बाद ही सैनिक देवभूति और कौमुदी को लेकर पहुँच जाते हैं। एकान्त पाकर वासन्ती कालिदास को विजयी कार्तिकेय का सम्बोधन कर माला पहनाकर उनका स्वागत करती है और बिना किसी रक्तपात के विजय प्राप्ति के लिए प्रसन्नता व्यक्त करती है। इसी बीच विक्रम मित्र पहुँच जाते हैं। वासन्ती और कालिदास सहम जाते हैं। विक्रम मित्र वासन्ती से कहते हैं कि तुम्हारे पिता अभी आ रहे हैं और वे तुम्हें लेकर काशी जायेंगे। साथ ही वे कालिदास को भी माँग रहे हैं। वासन्ती आचार्य के पास ही रहने की इच्छा व्यक्त करती है। दूसरी ओर कालिदास भी जाना नहीं चाहते। वे कुमार विषमशील का राज कवि, अन्तरंग सखा बनकर रहने की इच्छा प्रकट करते हैं।

**तृतीय अंक**—नाटक के तीसरे अंक की घटना अवन्ति में घटित होती है। इसमें गर्दभिल्ल, महेन्द्रादित्य के पुत्र विषमशील के नेतृत्व में भारत के अनेक वीर सेनानी और शासक एकजुट होकर शक क्षत्रपों को पराजित करते हैं और मालवा का उद्धार करके शकों के विरुद्ध इस अभियान में सारे सहयोग और सफलता का श्रेय शुंग सेनापति विक्रम मित्र को है। उनके प्रभाव से कलिंग के जैन क्षारबेलि, दक्षिण के स्वाशितफर्णि, विगत, काशिराज आदि अनेक महारथी इस अभियान में सम्मिलित होते हैं। विक्रम मित्र के प्रभाव से जैन आचार्य कालक जिन्होंने शकों को इस देश पर आक्रमण करने के लिए उत्साहित किया है, अपनी गलती का अनुभव करते हैं। उसमें देश के नव-निर्माण की भावना का उदय होता है। वे अवन्ति के निर्माण में जैन मठों में एकत्र सारी सम्पत्ति सोना, चाँदी, दुर्लभ रत्न आदि को समर्पित करने का संकल्प लेते हैं।

अस्सी वर्षीय वृद्ध विक्रम मित्र को कुमार विषमशील की सफलता से अतीव प्रसन्नता होती है। वे स्वेच्छा से साकेत, मगध, विदिशा समेत सारी प्रजा का पालन-भार विषमशील पर छोड़ देते हैं। राज्याभिषेक के उपरान्त विषमशील के समक्ष देवभूति और कौमुदी का मामला न्याय के लिए प्रस्तुत किया जाता है। देवभूति अपने अपराध के लिए स्वयं देश निर्वासन स्वीकार करता है। मलयवती का विवाह कुमार विषमशील से तथा वासन्ती का विवाह कालिदास के साथ सम्पन्न होता है। कालिदास की इच्छानुसार 'विक्रम मित्र' का पूर्वार्द्ध 'विक्रम' और पिता 'महेन्द्रादित्य' का उत्तरार्द्ध 'आदित्य' शब्द मिलाकर विषमशील का नाम विक्रमादित्य रखा जाता है। कौमुदी और देवभूति के देश छोड़ देने से साकेत और पाटलिपुत्र भी अवन्ति के अधिकार में आ जाता है। अवन्ति के इस उद्धार पर नये विक्रम संवत् का प्रवर्तन होता है।

## अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न 1.** 'गरुड़ध्वज' नाटक राष्ट्रीय चेतना का सन्देश देता है, सिद्ध कीजिए।
**प्रश्न 2.** देश-काल की दृष्टि से 'गरुड़ध्वज' की समीक्षा कीजिए।
**प्रश्न 3.** 'गरुड़ध्वज' एक ऐतिहासिक नाटक है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।
**प्रश्न 4.** 'गरुड़ध्वज' नाटक में किस समस्या को उठाया गया है?
**प्रश्न 5.** 'गरुड़ध्वज' नाटक में कौन-सा अंक आपको सबसे अच्छा लगा और क्यों?
**प्रश्न 6.** 'गरुड़ध्वज' के प्रतिपाद्य विषय (कथावस्तु) पर प्रकाश डालिए।
**प्रश्न 7.** 'गरुड़ध्वज' के पहले अंक में चित्रित घटनाओं को अपने शब्दों में लिखिए।
**प्रश्न 8.** 'गरुड़ध्वज' नाटक के द्वितीय अंक की कथा संक्षेप में लिखिए।
**प्रश्न 9.** 'गरुड़ध्वज' नाटक के तृतीय अंक की कथा संक्षेप में लिखिए।
**प्रश्न 10.** 'गरुड़ध्वज' नाटक की नाटक के तत्त्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए।

# 4

# सूतपुत्र

**( डॉ. गंगासहाय 'प्रेमी' )**

**प्रयागराज, सहारनपुर, अलीगढ़, मुजफ्फरनगर, गाजीपुर, मैनपुरी, जालौन, हरदोई, बाराबंकी।**

डॉ० गंगासहाय 'प्रेमी' द्वारा लिखित नाटक 'सूत-पुत्र' महाभारत के प्रसिद्ध पात्र दानवीर कर्ण के जीवन की घटनाओं पर आधारित है। इस नाटक में पौराणिक कथा को आधार बनाकर वर्तमान भारतीय समाज की विसंगतियों—वर्ण, जाति, वर्ग एवं महिलाओं की स्थिति का विवेचन किया गया है। इस नाटक के माध्यम से नाटककार ने कर्ण के प्रति पाठकों के मन में सहानुभूति उत्पन्न करने का प्रयास किया है। इस नाटक में नाटककार ने नारी की समाज में विवशता, नारी शिक्षा की समस्या आदि का चित्रण कर उसे वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समझाने का प्रयास किया है।

## 'सूतपुत्र' नाटक की कथावस्तु ( सारांश )

डॉ. गंगासहाय 'प्रेमी' द्वारा लिखित 'सूतपुत्र' एक समस्यामूलक विचारोत्तेजक पौराणिक नाटक है, जिसका कथानक महाभारत से लिया गया है। इसका कथानक (सारांश) इस प्रकार है—

**प्रथम अंक**—आचार्य परशुराम सूतपुत्र 'कर्ण' के जंघे पर सिर रखकर सोये हुए हैं। उनका उत्तरीय रक्त से भीग गया है। रक्त की उष्णता से उनकी नींद टूट जाती है। वे देखते हैं कि विषैला कीड़ा कर्ण की जांघ में माँस कुतरकर भीतर प्रवेश कर गया है और कर्ण सब कुछ सहन करता हुआ उन्हें इसलिए नहीं जगा रहा है कि गुरुदेव को कष्ट होगा। वे उठकर तुरन्त आश्रम में जाते हैं और बाण लाकर कीड़े को उसकी नोक से निकाल देते हैं। वन से 'नखरंजनी' घास लाकर उसके रस को घाव पर गिराकर उसका उपचार करते हैं। इस प्रकार शिष्य पर प्रगाढ़ प्रेम होते हुए भी उसकी दृढ़ता और धैर्य को देखकर उन्हें उसके ब्राह्मण होने पर सन्देह हो जाता है और बातचीत द्वारा सारे रहस्य को खुलवा लेते हैं। उनका क्रोध जाग उठता है। वे कर्ण को शाप देते हैं कि यहाँ आश्रम में सीखी हुई विद्या उसके काम नहीं आयेगी। वह विद्या अन्तिम समय में भूल जायेगी।

इस प्रकार कर्ण 'सूर्यपुत्र' होते हुए भी 'सूतपुत्र' के असवर्णत्य का नामपट्ट लगा होने के कारण गुरु के आशीर्वाद से वंचित रह जाता है। जन्मदाता और गुरु दोनों में से किसी का भी उसे स्नेह अथवा आशीष नहीं मिल पाता।

**द्वितीय अंक**—नाटक के दूसरे अंक में पांचाल नरेश द्रुपद की सुन्दर कन्या द्रौपदी के स्वयंवर का दृश्य है। वहाँ शर्त रखी गई है कि जो व्यक्ति कड़ाह के खौलते हुए तेल को देखकर ऊपर चक्र में घूमती हुई मछली की बाईं आँख को वेध देगा, उसी के साथ द्रौपदी का विवाह होगा। स्वयंवर की शर्त बड़ी है। दूर-दूर के राजकुमार पहुँचे हुए हैं। कर्ण दुर्योधन के साथ वहाँ पहुँच जाता है। किन्तु यहाँ भी उसका असवर्णत्व उसके मार्ग में बाधक बन जाता है। कर्ण अपना पूरा परिचय नहीं दे पाता, अत: वह लक्ष्य-वेध से रोक दिया जाता है। कर्ण में निहित विद्रोही भावनाओं को परखकर उसी राजसभा में दुर्योधन कर्ण को अंग देश का राजा घोषित कर देता है किन्तु फिर भी उसे अज्ञात कुल-जन्मा होने के कारण स्वयंवर में भाग लेने के लिए पात्र नहीं माना जाता। अन्त में अज्ञातवास बिता रहे अर्जुन भीम के साथ ब्राह्मण वेश में स्वयंवर सभा में आते हैं और लक्ष्य-वेध कर द्रौपदी को वरण करते हैं। दुर्योधन विरोध द्वारा द्रौपदी को छीनना चाहता है किन्तु कर्ण इसे अनुचित मानता है। वह क्षोभ और कटुता लेकर स्वयंवर से वापस आता है। द्रौपदी के इस स्वयंवर की घटना से कर्ण दुर्योधन का पक्षधर और पाण्डवों का कट्टर विरोधी बन जाता है।

**तृतीय अंक**—नाटक के तीसरे अंक में महाभारत युद्ध से पूर्व गंगा तट पर कर्ण सूर्य की उपासना करता है। सूर्यदेव प्रकट होकर उसे अपना परिचय-सम्बन्ध सब कुछ बता देते हैं। कर्ण की रक्षा के लिए वे सोने का कुण्डल और कवच देते हैं। जिसकी विशेषता यह है कि वह शरीर से आसानी से नहीं छूट सकता। वे कर्ण को भावी आसन्न संकट से भी अवगत करा देते हैं कि इन्द्र

उसे छलने के लिए आ रहे हैं। किन्तु वह अपनी दानवीरता पर अडिग है। इन्द्र की याचना पर कवच और कुण्डल इन्द्र को दे देता है। इन्द्र प्रसन्न हो जाते हैं और अपनी ओर से 'अमोघ' अस्त्र उसकी अन्तिम रक्षा के लिए दे देते हैं। इसके बाद ही वहाँ महाभारत के भीषण युद्ध की आशंका से भयभीत कुन्ती का आगमन होता है जो स्पष्ट कर देती है कि कर्ण उसका जेष्ठ पुत्र है। वह कर्ण से अनुरोध करती है कि वह दुर्योधन का पक्ष छोड़कर पाण्डवों की ओर आ जाय और उनके राज्य का उत्तराधिकारी बने। किन्तु कुन्ती का वात्सल्य प्रेम, राज्य, प्रलोभन, मातृत्व आदि कर्ण को उसके कर्त्तव्य पथ से विचलित नहीं कर पाते। वह इसे विश्वासघात मानता है और कुन्ती को इस बात पर आश्वस्त करके वापस करता है कि 'अर्जुन' को छोड़कर वह किसी पाण्डव का अहित नहीं करेगा और अर्जुन के न रहने पर भी उसको लेकर कुन्ती के पाँच पुत्र रहेंगे।

**चतुर्थ अंक–**नाटक के चतुर्थ अंक में कर्ण के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालने के लिए नाटककार को तीन दृश्यों का आयोजन करना पड़ा है। प्रथम दृश्य में कुरुक्षेत्र के युद्ध का दृश्य है जिसमें कर्ण और शल्य के पारस्परिक सम्बन्ध की चर्चा है। शल्य सारथि है। वह कर्ण के अधीनस्थ काम करने में अपमान का अनुभव करता है। उधर कर्ण महारथी के पद पर आसीन है। उसकी आज्ञा का उल्लंघन और शल्य के व्यंग्य-बाणों से उसका मनोबल गिरता है। बहुत कहने के बाद शल्य रथ को अर्जुन के पास लाता है। कर्ण की वीरता का लोहा श्रीकृष्ण भी मानते हैं। दुर्भाग्य से कर्ण का रथ दलदल में फँस जाता है। शल्य नीचे नहीं उतरता। कर्ण को शस्त्र त्याग कर भूमि पर रथ का चक्का कीचड़ से निकालने के लिए उतरना पड़ता है। अर्जुन नि:शस्त्र कर्ण पर बाण-प्रहार करते हैं। कर्ण गिर पड़ता है। कौरव सेना में शोक व्याप्त हो जाता है।

दूसरे दृश्य में कर्ण के चरित्र को और भी उजागर करने के लिए श्रीकृष्ण और अर्जुन के प्रयास की चर्चा है। चौथे अंक के दूसरे दृश्य में श्रीकृष्ण और अर्जुन कर्ण की दानशीलता, धैर्य और साहस की अन्तिम परीक्षा लेने की योजना बनाते हैं।

तीसरे दृश्य में श्रीकृष्ण और अर्जुन ब्राह्मण वेश बनाकर कुरुक्षेत्र के युद्ध भूमि से आहत-मरणासन्न कर्ण की दानवीरता, धैर्य और साहस की परीक्षा लेते हैं। युद्ध भूमि में अब कर्ण लाशों के बीच मरणासन्न कराह रहा है। श्रीकृष्ण अर्जुन के साथ ब्राह्मण बनकर दान माँगने के लिए पहुँचते हैं। कर्ण अपने दाँत में लगे सोने को देना चाहता है। वह पत्थर के टुकड़े से दाँत तोड़ता है। बाण से पृथ्वी छेद कर जल निकालता है और सोने को धोकर दान दे देता है तथा श्रीकृष्ण की परीक्षा में खरा उतरता है। श्रीकृष्ण अर्जुन और कर्ण को भाई-भाई के रूप में मिला देते हैं और कर्ण हमेशा के लिए आँखें बन्द कर लेता है।

## अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न 1.** 'सूत्रपुत्र' शीर्षक की सार्थकता पर विचार व्यक्त कीजिए।

**प्रश्न 2.** 'सूतपुत्र' नाटक का कथानक (कथावस्तु) का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

**प्रश्न 3.** डॉ. गंगासहाय 'प्रेमी' ने अपने नाटक 'सूतपुत्र' में प्राचीन कथा को आधार बनाकर वर्तमान की किन ज्वलन्त समस्याओं को चित्रित किया है? संक्षिप्त उत्तर दीजिए।

**प्रश्न 4.** 'सूतपुत्र' नाटक की भाषा-शैली पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

**प्रश्न 5.** संवाद-योजना की दृष्टि से 'सूतपुत्र' नाटक की विवेचना कीजिए।

**प्रश्न 6.** कर्ण की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

**प्रश्न 7.** 'सूतपुत्र' के आधार पर परशुराम की चारित्रिक विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

**प्रश्न 8.** 'सूतपुत्र' नाटक के आधार पर श्रीकृष्ण के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

**प्रश्न 9.** कुन्ती के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

**प्रश्न 10.** "कर्ण का जीवन फूलों की शैय्या नहीं, ज्वालागिरि का निवास था।" 'सूतपुत्र' नाटक के आधार पर सिद्ध कीजिए।

**प्रश्न 11.** नाट्य कला की दृष्टि से 'सूतपुत्र' की समीक्षा कीजिए।

# 5 राजमुकुट

## ( व्यथित हृदय )

**कानपुर, बुलन्दशहर, मथुरा, बस्ती, मिर्जापुर, देवरिया, बांदा, रामपुर।**

नाटककार 'व्यथित हृदय' द्वारा रचित नाटक 'राजमुकुट' महाराणा प्रताप के जीवन पर आधारित है। इस ऐतिहासिक नाटक में महाराणा प्रताप, शक्ति सिंह, अकबर, जगमल आदि के चरित्रों के माध्यम से देशप्रेम, धार्मिक सहिष्णुता एवं धार्मिक एकता की भावना आदि को आधुनिक समाज हेतु उपयोगी मानकर स्थापित करने की कोशिश की गयी है। 'राजमुकुट' नाटक की कथावस्तु का मूल उद्देश्य देशप्रेम एवं स्वाधीनता की रक्षा के लिए बलिदान करने की भावना को प्रेरित करना है। नाटककार ने ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर काल्पनिक तत्त्वों का समायोजन करके आधुनिक समाज में व्याप्त समस्याओं की ओर संकेत किया है। इस नाटक में देश के प्राचीन मूल्यों एवं प्राचीन संस्कृति का भी उल्लेख किया गया है।

## 'राजमुकुट' नाटक की कथावस्तु ( सारांश )

**प्रथम अंक :** 'राजमुकुट' भारतीय इतिहास की एक स्वर्णिम गाथा को आधार बनाकर लिखा गया ऐतिहासिक एकांकी है। इसमें महाराणा प्रताप के पराक्रम, अनन्य त्याग और बलिदान की कथा को प्रस्तुत किया गया है।

संक्षेप में इस नाटक की कथा इस प्रकार है—

नाटक के प्रथम अंक में महाराणा प्रताप के पूर्व की पृष्ठभूमि का उल्लेख है, जिसमें जगमल के विलासितापूर्ण जीवन का बड़ा ही सजीव किन्तु हास्यास्पद चित्रण प्रस्तुत किया गया है। जगमल शराब के नशे में आधी रात को प्रलाप कर रहा है। उसे प्रजावती के जागरण गीत सुनाई पड़ते हैं, जो जगमल को बिलकुल ही प्रिय नहीं हैं। वह प्रहरी से प्रजावती को दण्ड देने का आदेश देता है। प्रजावती की हत्या कर दी जाती है।

राज्य में दूसरी ओर जगमल की राजव्यवस्था और विलासितापूर्ण जीवन के विरुद्ध जनता में असन्तोष की आग सुलग रही है। प्रजावती की हत्या उसमें भी काम करती है। किसान और मजदूरों में विरोध की आग भड़कती है। चन्दावत और अजय बाप-बेटे राज्य की दुर्व्यवस्था पर चिन्तन कर रहे हैं, तब तक उन्हें प्रजावती के साथ प्रदर्शनकारियों का जुलूस दिखलाई पड़ता है। चन्दावत कृषक प्रदर्शनकारियों को शान्त करके विवेक से काम लेने का उपदेश देते हैं।

सत्ता के विरुद्ध विद्रोह की आग धीरे-धीरे विकराल रूप धारण करती जा रही है। मेवाड़ के राजसिंहासन पर बैठे जगमल को कोई चिन्ता नहीं है। वह पूर्ववत् विलासिता में लीन है। उसके चापलूस सेवक निरीह और भोली-भाली जनता पर अत्याचार कर रहे हैं। अन्त में जगमल के विरुद्ध जनमत तैयार हो जाता है और चन्दावत के नेतृत्व में वह राजभवन में जाकर जगमल का राजमुकुट उतार लेता है। यह राजमुकुट मेवाड़ के उदीयमान सशक्त वीर योद्धा महाराणा प्रताप के सिर पर रखा जाता है। इस प्रकार प्रथम अंक में कथा का प्रारम्भ हो जाता है, साथ-ही-साथ प्रयत्न की भूमिका के रूप में महाराणा प्रताप देश की एकता और स्वतन्त्रता का संकल्प लेते हैं।

**द्वितीय अंक :** महाराणा प्रताप के राजसिंहासन पर बैठते ही देश का नक्शा बदल जाता है। विलासिता के स्थान पर शौर्य का साम्राज्य हो जाता है। महाराणा प्रताप देश की रक्षा के लिए सैनिकों को तैयार रहने की प्रेरणा देते हैं। वीरता प्रदर्शन के लिए राज्य में 'अहेरिया उत्सव' का आयोजन किया जाता है, जिसमें प्रत्येक सैनिक को अपने बर्छे से एक शिकार लाना आवश्यक है। 'अहेरिया उत्सव' के अवसर पर ही एक अत्यन्त ही दु:ख और दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटित होती है। राणा प्रताप सिंह और उनके भाई शक्ति सिंह में एक शूकर के शिकार के प्रश्न पर विवाद छिड़ जाता है। दोनों उसे अपने बाण से मारा हुआ बतलाते हैं। विवाद बढ़ते-बढ़ते युद्ध का रूप ले लेता है। दोनों ओर से तलवारें खिंच जाती हैं। इसी बीच पुरोहित दोनों को शान्त कराने के लिए पहुँच जाते हैं, किन्तु कोई उनका कहना नहीं मानता। अन्त में वह कटार से आत्महत्या करके घटनास्थल पर ही आत्मोत्सर्ग कर देते हैं। इस घटना से दोनों अवाक् रह जाते हैं। अन्त में महाराणा प्रताप शक्ति सिंह को 'ब्रह्महत्या' के आरोप में देश-निर्वासन का दण्ड देते हैं, जिसे शक्ति सिंह स्वीकार कर देश-निर्वासित हो जाते हैं। वे अकबर के पुत्र सलीम से जा मिलते हैं।

**तृतीय अंक :** महाराणा प्रताप को बराबर देश की स्वतन्त्रता की चिन्ता लगी रहती है। इसी बीच अकबर के दूत मानसिंह महाराणा प्रताप से मिलने के लिए आते हैं। महाराणा मानसिंह-जैसे देशद्रोही, कुल कलंक से मिलने में अपना अपमान मानते हैं। वे अपने पुत्र अमरसिंह को मानसिंह का उचित आतिथ्य-सत्कार करने का आदेश देते हैं, किन्तु स्वयं मिलना नहीं चाहते और सिर-दर्द का बहाना बनाकर अपने झोपड़े में बैठे रहते हैं। मानसिंह इस व्यवहार को भाँप जाता है और संघर्ष की चुनौती देने लगता है। चुनौती सुनकर राणा प्रकट हो जाते हैं और मानसिंह को ललकारते हुए उसकी चुनौती स्वीकार कर लेते हैं। वे कहते हैं—"जाइए राजा जी, जाइए! मैं आज से ही आपकी प्रतीक्षा करूँगा। आशा है आप अब मेवाड़ में उफान लेकर ही आयेंगे।"

युद्ध की तैयारियाँ मेवाड़ के घर-घर में होने लगती है। क्षत्राणियाँ अपने पतियों को देश पर जूझने के लिए प्रेरणा प्रदान करती हैं।

उधर कूटनीतिज्ञ अकबर शक्ति सिंह और मान सिंह को मिलाकर अपनी राह का काँटा निकाल देने का अच्छा अवसर देखता है। वह दोनों को मिलाकर अपने बेटे सलीम के सेनापतित्व में मेवाड़ पर आक्रमण करने का आदेश देता है।

हल्दी-घाटी युद्ध-भूमि बनी है। घमासान युद्ध होता है। महाराणा प्रताप मान सिंह को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते शत्रुओं के सैनिकों के बीच घिर जाते हैं। रक्षा के लिए चन्दावत कृष्ण वहाँ पहुँच जाते हैं और राणा का 'राजमुकुट' अपने सिर पर रख लेते हैं और आग्रहपूर्वक राणा को सुरक्षित चेतक के साथ बाहर भेज देते हैं। राणा के भ्रम में चन्दावत कृष्ण का वध हो जाता है। किन्तु शक्ति सिंह जब चन्दावत के इस त्याग को देखते हैं तो उनकी आँखें खुल जाती हैं। वे देखते हैं कि राणा प्रताप क्षत-विक्षत अवस्था में चेतक के साथ दूर चले जा रहे हैं। दो मुगल सैनिक उनका पीछा कर रहे हैं। शक्ति सिंह उन्हें रोकते हैं। 'चेतक' मर जाता है। राणा खिन्न मन बैठे हैं। शक्ति सिंह अपने किये पर पश्चात्ताप करते हैं। दोनों भाई गले मिलते हैं। शक्ति सिंह अपना घोड़ा राणा प्रताप को देकर विदा करते हैं और स्वयं राजस्थान की पहाड़ियों में अज्ञातवास के लिए चले जाते हैं।

**चतुर्थ अंक :** हल्दी-घाटी का युद्ध समाप्त हो जाता है, परन्तु राणा हार नहीं मानते। अकबर प्रताप की देशभक्ति, त्याग और वीरता का लोहा मानते हैं तथा महाराणा प्रताप के प्रशंसक बन जाते हैं। एक दिन प्रताप के पास एक संन्यासी आता है। प्रताप संन्यासी का उचित सत्कार न कर पाने के कारण व्यथित हैं। उसी समय राणा की पुत्री चम्पा घास की बनी रोटी लेकर आती है, जिसे एक वन-बिलाव छीनकर भाग जाता है। चम्पा गिर जाती है और पत्थर से टकराकर उसकी मृत्यु हो जाती है। इस समय अकबर राणा को भारत माता का पूत बताता है और प्रताप के दर्शन करके अपने को धन्य मानता है। संघर्षरत प्रताप रोगग्रस्त हो जाते हैं। वह शक्ति सिंह तथा अपने सभी साथियों से स्वतन्त्रता-प्राप्ति के वचन लेते हैं। 'भारत-माता की जय' के साथ महाराणा का देहान्त हो जाता है। 'राजमुकुट' की यह कथा भारत के स्वर्णिम इतिहास और एक रण-बाँकुरे वीर की अमर कहानी है।

## अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न 1.** 'राजमुकुट' नाटक के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।
**प्रश्न 2.** 'राजमुकुट' नाटक के आधार पर महाराणा प्रताप का चरित्र-चित्रण कीजिए।
**प्रश्न 3.** 'राजमुकुट' नाटक की भाषा एवं संवाद-योजना की विशेषता पर प्रकाश डालिए।
**प्रश्न 4.** 'राजमुकुट' नाटक के देश-काल और वातावरण का वर्णन कीजिए।
**प्रश्न 5.** 'राजमुकुट' नाटक की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
**प्रश्न 6.** स्पष्ट कीजिए कि 'राजमुकुट' नाटक में इतिहास और कल्पना का सुन्दर समावेश किया गया है।
**प्रश्न 7.** 'राजमुकुट' नाटक की नाट्य-कला की दृष्टि से समीक्षा कीजिए।
**प्रश्न 8.** 'राजमुकुट' नाटक के आधार पर महाराणा प्रताप और अकबर की भेंट का वर्णन कीजिए।
**प्रश्न 9.** 'राजमुकुट' नाटक के मार्मिक स्थलों का वर्णन कीजिए।
**प्रश्न 10.** 'राजमुकुट' नाटक के प्रथम अंक की कथावस्तु लिखिए।
**प्रश्न 11.** 'राजमुकुट' नाटक के द्वितीय अंक की कथा का सार लिखिए।
**प्रश्न 12.** 'राजमुकुट' नाटक के तृतीय अंक की कथा का सार लिखिए।
**प्रश्न 13.** 'राजमुकुट' नाटक के तृतीय अंक के कथ्य संक्षेप में लिखिए।